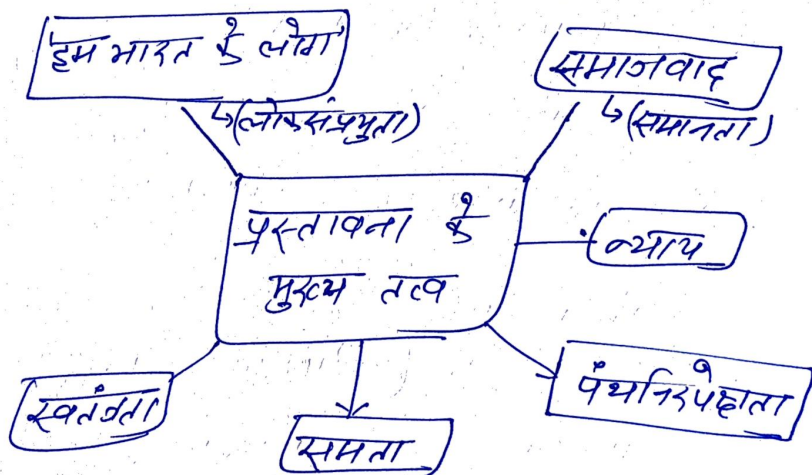


(8) भारतीय संविधान की प्रस्तावना की आत्मा समकालीन भारत में जाति, गरीबी, पिछड़ा और बहुसंख्यवाद जैसे वास्तविकताओं से कैसे लकड़ी है? [38M]

भारतीय संविधान की प्रस्तावना समकालीन समाज की समस्याओं यथा जाति, गरीबी, पिछड़ा और बहुसंख्यवाद का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही एक आधुनिक राज्य की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत करता है। जो कि इसके प्रावधानों में निहित है।



① लोकसंप्रभुता

भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'हम भारत के लोग' से शुरू होती है इसका महत्व यह है कि -

(क) भारत के सभी लोगों का समान एवं पूर्ण सहभागिता है।

(ख) जाति, गरीबी, पितृसत्ता और बहुसंख्यवाद से परे, सभी लोगों का समान महत्व है।

② स्वतंत्रता

प्रस्तावना में 'उद्धारवाद' शब्द का उपयोग न होने के बावजूद उद्धारवादी तत्व मौजूद हैं जो प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता की सुनिश्चित करती हैं।

साथ ही यह व्यक्ति की स्वतंत्रता सभी सुनिश्चित दिया जा सकता है जब जातिगत भेदभाव, गरीबी, पितृसत्ता और बहुसंख्यवाद जैसे तत्वों को हटाया/हटाया जायगा।

(3) प्रतिष्ठा और अवसर की समता

- (क) प्रस्तावना प्रचुर व्यक्ति की गरीमापूर्ण जीवन तथा अवसर की समानता का प्रावधान करता है।
- (ख) गरीमापूर्ण जीवन तथा समान अवसर व्यक्ति को तभी प्राप्त हो सकता है जब वह जातिगत भेदभाव, गरीबी, पिछड़ाता तथा बहुसंख्यक से मुक्त हो।

(4) पंचनिर्पेक्षता

- (क) प्रस्तावना में निहित पंचनिर्पेक्षता रोड़े समान ही स्थापना करना चाहता है जो अन्तर्धार्मिक तथा अन्तर्धार्मिक भेदभाव से मुक्त हो।

- (ख) अन्तर्धार्मिक पंचनिर्पेक्षता भेदभाव जातिगत भेदभाव से हटी जाहित करता है।

- (ग) अन्तर्धार्मिक पंचनिर्पेक्षता बहुसंख्यक काद से हटी जाहित करता है।

पंचनिरूपण का प्रकार	मुख्य विशेषता
अंतः धार्मिक	जातिगत भेदभाव को दूर करना
अन्तर्धार्मिक	सम्प्रदायवाद तथा बहुसंस्कृतवाद को दूर करना

5 न्याय

(क) प्रस्तावना में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक न्याय का प्राश्चान ।

(ख) न्याय का तात्पर्य है 'प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकारों, स्वतंत्रता तथा स्थिति के अनुसार उचित रूप में हक प्रदान करना।'

न्याय का प्रकार	मुख्य विशेषता
सामाजिक न्याय	वंचित वर्गों को उनके अधिकार और सम्मान प्रदान करना
आर्थिक न्याय	संपत्ति और संसाधनों का आवंटन और भाँजान के आधार पर निष्पक्ष वितरण
राजनीतिक न्याय	सभी को समान राजनीतिक भागीदारी का अवसर प्रदान करना

⑥ समाजवाद

(क) समाजवाद का मुख्य बल संसाधनों का उचित वितरण पर। अर्थात् यह गरीबी निवारण का मुख्य आधार बना।

(ख) साथ ही यह वर्गीय असमानता को उड़ते जातिगत भेदभाव, बहुसंख्यवाद, पिछड़ाता इत्यादि से भी को उड़ने का प्रयास करता है।

निष्कर्षतः प्रस्तावना जाती,
गरीबी, पिछड़ाता और बहुसंख्यवाद जैसे सामाजिक समस्याओं से दूर उड़ते यह 'आधुनिक' -वाचपूर्ण समाज की स्थापना का आदर्श प्रकट करता है।